युद्धखोर की भाषा बोल रहे हैं पीएम मोदी

महेंद्र मिश्र

पीएम मोदी अब युद्धखोर की भाषा बोलने लगे हैं। कल उन्होंने अहमदाबाद में कहा कि हम बदला लेने में देरी नहीं करते और देश के भीतर घुसकर मारेंगे। इस तरह का वाक्य सेना का कोई चीफ भी बोलने से परहेज करेगा। देश के राजनैतिक कार्यकारी मुखिया को तो और ज्यादा धीर-गंभीर, कूटनीतिक और रणनीतिक होना चाहिए। किसी भी राजनेता की सबसे बड़ी सफलता यह है कि अगर सामने वाला युद्ध की भाषा बोल रहा है तो भी आप शांति की बात करिए।

इसका मतलब यह नहीं है कि आप अपनी युद्ध की तैयारियां नहीं रखते हैं या फिर जरूरत पड़ने पर मुंहतोड़ जवाब नहीं देते हैं। लेकिन किसी गली के गुंडे सरीखा व्यवहार आपकी उन रही-सही तैयारियों पर भी पानी फेर देता है। अगर आप सक्षम हैं तो फिर उसे बोलने की क्या जरूरत है? लेकिन सच यही है कि बालाकोट में मनमाफिक सफलता न मिलने या फिर पाकिस्तान के मुकाबले बढ़त हासिल न कर पाने की कमी, जिसकी खुद पीएम ने इंडिया टुडे कन्क्लेव में यह कह कर स्वीकारोक्ति की है कि अगर हमारे पास राफेल होता तो नतीजे कुछ और होते, अब युद्धोन्मादी भाषणों से पूरी की जा रही है।

एक ऐसे दौर में जबकि अमेरिका के खिलाफ आग उगलने वाले उत्तर कोरिया के शासक किम जोन से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप वियतनाम की उस धरती पर जाकर बात कर रहे हैं जहां से कभी अमेरिका की अपमान जनक शिकस्त हुई थी। क्या कभी कोई सोच सकता था कि किम जोन और ट्रंप के बीच बात भी हो सकती है। मिसाइल पर मिसाइल छोड़कर किम ने पूरी दुनिया की नाक में दम कर रखा था। और एकबारगी तो अमेरिका को पूरी दुनिया की तरफ से उस पर हमले की छूट मिल गयी थी। बावजूद इसके दोनों उस आत्मघाती रास्ते पर नहीं गए। इस समय अमेरिका अफगानिस्तान में उस तालिबान से बात कर रहा है जिसको उसने जड़ से खत्म करने का संकल्प ले लिया था। लेकिन दोनों अब मिल कर शांति के रास्ते की तलाश में जुट गए हैं।

दुनिया ने वह दौर भी देखा जब बर्लिन की दीवार ढह गयी और पूर्वी तथा पश्चिमी जर्मनी एक हो गए। एक दूसरे के धुरविरोधी उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया जमाने के बाद एक दूसरे से मिले और अब मिल कर समस्याओं को हल करने के लिए राजी हो गए हैं। उत्तरी वियतनाम और दक्षिणी वियतनाम एक हो गए हैं। वह समय भी आया जब इंग्लैंड समेत पश्चिमी यूरोप ने इस बात को महसूस किया कि इराक पर उनके द्वारा किया गया हमला गलत था। और उसके पास घातक हथियारों के न होने की उसने सार्वजनिक तौर पर स्वीकारोक्ति भी की। अफगानिस्तान, इराक, लीबिया और सीरिया की तबाहियां देखकर युद्ध से हर देश जब तौबा कर लेना चाहता है। तब देश के मुखिया की ये भाषा क्या 15वीं सदी के किसी शासक की याद नहीं दिलाती है। जब राजे-रजवाड़े और सामंतों के बीच जमीन पर कब्जे और शासन के विस्तार और बचाव का एक मात्र हथियार युद्ध हुआ करता था।

सीरिया को छोड़कर दुनिया में इस समय कहीं भी युद्ध का माहौल नहीं है। वहां भी चीजें शांति के रास्ते पर बढ़ने के करीब हैं। तब ऐसी स्थिति में दक्षिण एशिया को युद्ध के नये क्षेत्र के तौर पर विकसित करने की कोशिश कहां की अक्लमंदी कही जा सकती है। लेकिन अमेरिका समेत हथियार उत्पादन वाले दूसरे देशों की यह जरूरत बन गयी है। क्योंकि अमेरिका को चीन की बढ़त को रोकना है। और पश्चिमी देशों को हथियार बेचने हैं। लिहाजा भारत जैसा एक आसान मुर्गा उन्हें मिल गया है। जो उसकी गोद में बैठने के लिए तैयार है। अगर हालात यही रहे और मोदी जैसे युद्धखोर इसकी अगुवाई करते रहे तो पूरे इलाके को युद्धक्षेत्र में बदलने से कोई नहीं रोक सकता है। क्योंकि आरएसएस के अखंड भारत का सपना पाकिस्तान के खंड-खंड से होकर गुजरता है। लेकिन क्या 21वीं सदी में यह बात संभव है। घुटनों में दिमाग रखने वाली इस जमात को यह बात जरूर समझनी चाहिए कि दूसरे को तबाह करने का रास्ता खुद की तबाही से होकर गुजरता है।

ऐसे में उस तरह के भस्मासुरी रास्ते पर बढ़ना किसी भी लिहाज से फायदेमंद नहीं हो सकता है। अभी जबकि हम अपने संसाधनों को अपनी जनता की सुख-सुविधाओं और उसकी दूसरी जरूरतों पर खर्च कर रहे हैं। युद्ध की स्थिति में वह सब कुछ हथियारों की खरीद और उसकी तैयारियों पर जाने लगेगा। जिसमें केवल और केवल हानि होगी। जन की होगी। धन की होगी। और फिर प्रतिष्ठा की होगी। और आखिर में तबाह हो चुका एक स्वतंत्र देश अमेरिका समेत पश्चिमी देशों का गुलाम बन कर रह जाएगा।

चैनलों ने तो पत्रकारिता की कंट्रोल लाइन ही उड़ा दी!

डॉ. यामीन अंसारी

भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव अपने चरम पर है। दोनों देशों के बीच भले ही बाक़ायदा जंग न हुई हो, लेकिन युद्ध के बादल अब भी मंडरा रहे हैं। यानी ख़तरा अभी टला नहीं है। इस बीच युद्ध से भी बड़ा ख़तरा हमारे सामने है। यह ख़तरा है मीडिया और विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का। अफसोस कि यह ख़तरा सीमा के इधर भी है और उधर भी है। यही कारण है कि सीमा के दोनों ओर सरकारों और फौज से ज़्यादा हमारे टीवी स्टूडियोज़ युद्ध के मैदान बन गए हैं। यहां की चीख़ पुकार, एक दूसरे पर लानत मलामत, गाली गलौच, बड़े बड़े और झूठे दावे, भ्रामक रिपोर्टिंग और विश्लेषण करते इन टीवी चैनलों ने अजीब सी जुनूनी स्थिति पैदा कर दी है। वैसे अपने ही पेशे के बारे में और वह भी आलोचनात्मक दृष्टिकोण से लिखना एक मुश्किल काम है,

लेकिन पत्रकारिता का पहला नियम कहता है कि अपनी भावनाओं और विचारों से परे होकर अपने काम को अंजाम दिया जाए। वैसे मैंने इस पेशे में आने के बाद सभी प्रकार की अनुकूल और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद हर संभव प्रयास किया है कि किसी भी कीमत पर सिद्धांतों से समझौता नहीं किया जाए। क्योंकि हक़ीक़त में तो पत्रकारिता आदर्शवाद और सिद्धांतों पर क़ुर्बान हो जाने का ही नाम है। भले ही आज इस पेशे में शामिल एक वर्ग ने न केवल सिद्धांतों को ताक़ पर रख दिया है, बल्कि अपने ज़मीर के साथ अपने क़लम का भी सौदा कर लिया है।

यह हमारे दौर की सबसे बड़ी त्रासदी है कि आज टीवी पत्रकारिता, पत्रकारिता कम चापलूसी और अदाकारी अधिक दिखती है। यहां समाचार बिकने लगे हैं, बल्कि चीख़-चीख़कर बेचे जा रहे हैं। अन्यथा पत्रकारिता का नियम तो कहता है कि किसी डर और लालच के बिना सरकारों से सवाल किया जाए, उनके कार्यों का हिसाब लिया जाए, जनता के मुद्दों को उठाया जाए, सरकारों की कमियों और लापरवाहियों को सामने लाया जाए, चाहे हुक्मरां कितना ही ताक़तवर व्यक्ति क्यों न हो। इतिहास गवाह है कि इसी देश में मौलवी मुहम्मद बाक़र जैसे पत्रकार भी पैदा हुए हैं। मौलवी मुहम्मद बाक़र की गिनती ऐसे मुस्लिम स्वतंत्रता सेनानियों में होती है जो पत्रकार तो थे ही, देशभक्ति को अपने ईमान

का हिस्सा समझते थे। उन्होंने अपनी बेबाक पत्रकारिता से अंग्रेज़ हुकूमत की नींव हिला कर रख दी थी। हर प्रकार के ज़ुल्म और अत्याचारों के बावजूद उनकी क़लम ख़ामोश नहीं हुयी, उस अत्याचारी सरकार के सामने उन्होंने हथियार नहीं डाले।

आखिरकार हुकूमत के सामने न झुकने और पत्रकारिता के सिद्धांतों से समझौता न करने के कारण 16 सितम्बर 1857 को मौलवी बाक़र को तोप के मुंह पर बांधकर शहीद कर दिया गया। जब हमारी पत्रकारिता के इतिहास में ऐसे जांबाज़ और बेबाक पत्रकार मौजूद रहे हों तो हमें उन्हें अपना आदर्श मानने में क्या बुराई है? आज अगर पत्रकारों को सवाल करने से रोका जा रहा है, उनके क़लम और ज़बान पर पाबंदी लगाने का प्रयास किया जा रहा है, उन्हें ख़रीदने और धमकी देने की कोशिश की जा रही है और यह सब संभव भी हो रहा है तो समझ लें कि क़लम और ज़बान अपना अस्तित्व खो चुके हैं।

पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर आतंकवादियों के हमले के बाद इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने जो भूमिका निभाई है, वह किसी फिल्म के खलनायक के रूप में हमारे सामने आती है। दंगा-फसाद, युद्ध और अनुकूल परिस्तिथियों में तो मीडिया से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी जिम्मेदारी निभाने की और कोशिश करेगा कि लोग और अधिक उग्र न हों और धैर्य से काम लें। परंतु आज इसके बिल्कुल विपरीत हो रहा है। पुलवामा हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच जैसे-जैसे तनाव बढ़ा, मीडिया ने आग में घी डालने का काम किया।

चैनलों पर चीख़ते चिल्लाते, बदला लेने, जनता को उत्तेजित करने और सरकार से पाकिस्तान के खिलाफ त्वरित कार्रवाई का दबाव बनाते टीवी एंकर लगता है जैसे खून के प्यासे हो गए हैं। उन्हें इंसानी जान की न परवाह है और न ही कोई उसका मूल्य है। वह समझते हैं कि टीवी स्टूडियो में बैठकर ही सारे मुद्दे हल हो जाएंगे। ऐसे में यही कहा जा सकता है कि आज की पत्रकारिता ने अपने सिद्धांतों से पूरी तरह से समझौता कर लिया है। उन्हें लगता है कि दंगा, फसाद और युद्ध की स्थिति से बेहतर उनके लिए कुछ नहीं है। जैसा कि ऊपर कहा गया कि अब समाचार और पत्रकारिता बेची जा रही है तो ऐसे में यह स्थिति उनके लिए एक समान है, जिसे वह अधिक मिर्च मसाला लगाकर बेच रहे हैं।

वर्तमान में मीडिया ने अपने प्रदर्शन से जो बदनामी हासिल की है, वह उनकी कमाई ही कही जा सकती है। हालांकि अब पाठक और दर्शक भी बखूबी उनके अभिनय और चापलूसी को समझने लगे हैं। यही कारण है कि कुछ टीवी एंकर तो अपनी उग्रता के कारण समाज में खलनायक बन गए हैं। उन्हें अब असामाजिक तत्वों में गिना जाने लगा। यहां तक कि वैश्विक स्तर पर भी हमारे मीडिया ने अपनी जो तस्वीर बनाई है वह सबके सामने है। कई मौकों पर भारतीय मीडिया का उपहास उड़ाया गया है। और यह सब पिछले कुछ समय के दौरान ही हुआ है, मतलब कहा जा सकता है कि इस समय पत्रकारिता अपने सबसे ख़राब दौर से गुजर रही है। वर्ना आज भी पत्रकारिता के सिद्धांतों पर चलने वाले और देश में उत्तेजना और घृणा के खिलाफ खुल कर बोलने वाले टीवी पत्रकार रवीश कुमार को दर्शकों से अपील नहीं करनी पड़ती कि आप लोग केवल दो ढाई महीने टीवी देखना बंद कर दें।

कुछ समाचार चैनल तो जैसे सुनियोजित तरीके से न केवल सरकार और संघ परिवार के प्रोपगंडे का हिस्सा बन गए हैं, बल्कि देश और समाज में नफरत को हवा देने में लगे हैं। इनमें पत्रकारिता के सिद्धांतों को धता बता कर केवल ज़हर उगलने और उत्तेजना फैलाने वाला रिपब्लिक चैनल सबसे आगे है। अभी तक अंग्रेजी में ही अपने भड़काऊ पन और चीख-पुकार के लिए प्रसिद्ध रहा यह चैनल अब हिंदी में भी विशेष उद्देश्य के तहत काम कर रहा है। इसका स्पष्ट प्रमाण है कि रिपब्लिक भारत चैनल ने लांचिंग के दिन ही एक झूठी और गुमराकुन ख़बर चलाई।

इस चैनल ने पहले ही दिन अयोध्या से संबंधित 28 वर्ष के बाद फर्जी और ग़लत ख़बर चलाई। जिसका उद्देश्य हिंदुओं की भावनाओं को भड़काना और यूपी में समाजवादी पार्टी के खिलाफ माहौल बनाना था। यह सिलसिला यहीं नहीं रुका। इसके कुछ दिन बाद ही अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में एक झूठे मामले को बड़े हंगामे में बदलने में चैनल का बड़ा रोल रहा। हिंदू संगठनों की राह अपनाते हुए पाकिस्तान का सहारा लेकर भारतीय मुसलमानों के खिलाफ ज़हर उगलना इस चैनल ने अपना सिद्धांत बना लिया है। हाल ही में जमाते इस्लामी हिंद और उसके अध्यक्ष को रिपब्लिक चैनल ने अपने झूठे और भ्रामक प्रचार का शिकार बनाया। पत्रकारिता के सिद्धांतों को रौंदते हुए चैनल ने जमाते इस्लामी हिंद के अध्यक्ष मौलाना जलालुद्दीन उमरी के बारे में झूठी, भ्रामक और आपत्तिजनक ख़बर चला दी।

रोज़नामा इंक़लाब ने इसके खिलाफ अभियान चलाया और आख़िरकार चैनल और उसके संपादक अर्नब गोस्वामी को बिना शर्त माफी मांगनी पड़ी। इसी प्रकार कांग्रेस नेता शशि थरूर की पत्नी सुनंदा पुष्कर की मौत के मामले में भी भ्रामक और असत्य कवरेज के कारण उसे एक अदालत के नोटिस का सामना करना पड़ा। केवल यही नहीं, इसके अलावा भी कई अन्य चैनल संघ परिवार की मुस्लिम विरोधी और सरकार समर्थक नीतियों पर चल रहे हैं। जंगी जुनून में डूबे हुए ऐसे ही एक अंग्रेजी चैनल सीएनएन न्यूज़ 18 ने मक्का, मदीना और मस्जिदे अक्सा की तस्वीरें दिखाकर उसे जैश के आतंकवादी कारखाना बता दिया।

इंक़लाब ने इस मामले को भी उठाया, आखिरकार इस स्टोरी पर न्यूज़ 18 नेटवर्क को स्पष्टीकरण जारी करना पड़ा। चैनल ने अपने स्पष्टीकरण में कहा कि एक मार्च को फर्स्टपोस्ट, सीएनएन और नेटवर्क 18 व अन्य ने एक खोजी रिपोर्ट चलाई थी, जिसमें प्रोपगंडा वीडियो का उपयोग किया गया था, जिसे जैश ने अपने मदरसे के विस्तार को दिखाने के लिए तैयार किया था।

अब यह कौन सा पत्रकारिता का नियम है कि एक आतंकवादी संगठन की प्रोपगंडा सामग्री चैनल पर चलाई जाए? खुदा जाने ये चैनल भारत को किस ओर ले जाना चाहते हैं। अगर यह सिलसिला नहीं रुका तो इसके परिणाम बहुत विस्फोटक हो सकते हैं।